वर्ष-3, अंक-11, जुलाई-सितंबर 2014

बच्चों का अपना अखबार

गुब्बारा

बच्चों के संग हरित गांव की पहल

वृक्ष हमारे पर्यावरण का संरक्षण करते हैं। हमें ऑक्सीजन देने के साथ-साथ यह हमारे ईंधन और प्रतिदिन प्रयोग में लाई जाने वाली तमाम चीजों में शामिल हैं। हमारे जीव-जंतुओं का आश्रय भी वृक्ष ही हैं।

पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए उरमूल सीमांत ने बच्चों के साथ मिलकर 'हरियालो कोलायत' पखवाड़ा अभियान चलाया। इस अभियान में छात्र-छात्राओं, अध्यापक, शाला प्रबंधन समिति के सदस्य, किशोर मंच और किशोरी प्रेरणा मंच के सदस्य, बाल समूह सदस्यों ने 36 गांवों में नीम, बोगनवीलिया, बेलपत्र, गूंदा, टाल्ली आदि के पेड़ लगाए।

गिरिराजसर, हदां, दियातरा, भेलू, सियाणा, छिला कश्मीर, खिंदासर, दासौड़ी, चिमाणा, नोखड़ा, बज्जू गांव के किशोर-किशोरी प्रेरणा मंच के सदस्यों ने विद्यालय में एक ही दिन पौधारोपण किया। सभी बच्चों ने शाला परिसर में लगाये गए पौधों को संरक्षित करने की जिम्मेदारी भी ली।

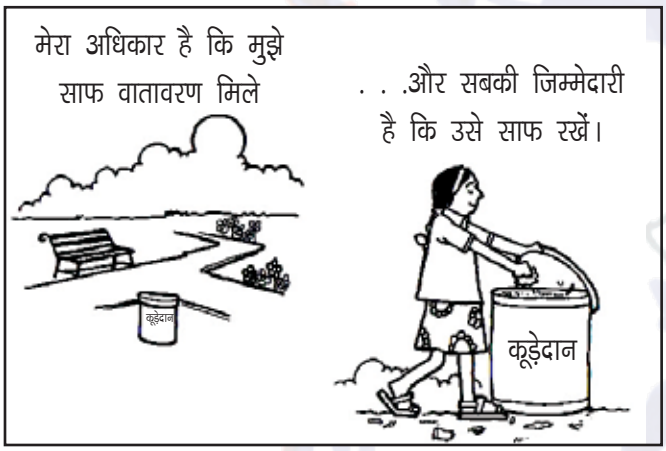

रोज जाऊंगा अब मैं शाला

शिक्षक मेरा बड़ा निराला ।
रोज जाऊंगा अब मैं शाला ।।
देखो नई किताबें आईं ।
नई कॉपियां भी मंगवाईं ।।
उनमें है अक्षर माला ।
रोज जाऊंगा अब मैं शाला ।।

जूते और नई वर्दी आई ।
दीदी की साईकिल भी आई ।।
प्रार्थना के लिए ड्रम है आया ।
सब बच्चों ने खूब बजाया ।।
दीवारों को चित्रों में ढ़ाला ।
रोज जाऊंगा अब मैं शाला ।।

गुरूजी भी कक्षा में आएं ।
गणित-विज्ञान हमको सिखलाएं ।।
नित-नित नई बात बताएं।
हम बच्चों को खूब हसाएं ।।
आया अब शिक्षा में उजाला ।
रोज जाऊंगा अब मैं शाला ।।

खुले में शौच करना है बीमारियों की जड़

तंदुरुस्त जीवन जीने के लिए अपने शरीर के साथ-साथ घर, व आस-पास सफाई जरूर रखनी चाहिए। हम सब यह जानते हैं कि गंदगी से ही बीमारियां फैलती हैं। खुले में शौच करने से भी गंदगी फैलती है। साफ-सफाई की कुछ छोटी मगर मोटी बातें बता रहे हैं गुब्बारा के पाठक दियातरा गांव से प्रेम कुमार।

प्रश्न- साफ-सफाई को लेकर गांव की सबसे बड़ी समस्या क्या है?

उत्तर- आज हमारे गांवों की सबसे बड़ी समस्या लोगों के खुले में शौच जाने की है। इससे हैजा, आंत्रशोध, पीलिया, दस्त जैसी बीमारियां फैलती हैं। यह बीमारियां कभी-कभी जान भी ले लेती हैं। जब हम खुले में शौच करते हैं तो मल पर मक्खियां बैठ जाती हैं। यहीं मक्खियां हमारे भोजन व अन्य खाने की चीजों पर बैठकर बीमारी पैदा करने वाले विषाणु फैलाती हैं। खुले में शौच करने से आस-पास स्थित तालाब, कुआं, जोहड का पानी भी दूषित हो जाता है। इसलिए खुले में शौच करना सबसे बड़ी समस्या है।

प्रश्न- हम इस समस्या को कैसे समाप्त कर सकते हैं?

उत्तर- बीमारियों से बचने के लिए यह जरूरी है कि हम अपने आस-पास गंदगी न फैलाएं। कचरे का व्यवस्थित तरीके से निपटान करें। शौचालय का प्रयोग करें। भोजन को हमेशा ढ़क कर रखें। पीने व खाना बनाने के लिए स्वच्छ जल का प्रयोग करें। इन सबके साथ ही हम साबुन या राख से हाथ धोएं।

प्रश्न- साफ-सफाई को लेकर आप क्या कर रहे हैं?

उत्तर- साफ-सफाई की बातों को सभी को बताने के लिए हम अपने विद्यालय में किशोर मंच और किशोरी प्रेरणा मंच की बैठकों में चर्चा करते हैं। मंच के सभी सदस्य बाल सभा, प्रार्थना सभा में साफ-सफाई की बातें रखते हैं। हम बच्चों की नाटक की एक टीम भी है 'उम्मीद'। उम्मीद की टीम, उरमूल गावणियार की नाटक टीम के साथ गांवों में जाकर कठपुतली, गीत-संगीत, नाटक से लोगों को साफ-सफाई की जरूरी बातें बताती हैं।

खुले में शौच भारत के लिए बड़ी समस्या

हमारे देश की प्रतिष्ठा के लिए शायद यह सबसे शर्मनाक होगा कि दुनिया में सबसे ज्यादा खुले में शौच करने वाले लोग भारत में हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ और विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा मई 2014 में जारी की गई रिपोर्ट बताती है कि हमारे देश के 59 करोड़ लोग प्रतिदिन खुले में शौच करते हैं। इसका मतलब साफ है कि भारत की 48 प्रतिशत जनता खुले में शौच जाती है। गांवों में यह समस्या और भी ज्यादा है। 59 करोड़ लोगों में से 65 प्रतिशत लोग गांवों में रहते हैं।

हमारे घरों या समुदाय में शौचालय न होने के कारण सबसे ज्यादा महिलाओं व किशोरियों को परेशानी उठानी पड़ती है। वे शौच जाने के लिए दिन ढलने का इंतजार करती हैं, कम पानी पीती हैं, कम खाती हैं। इससे उन्हें कई तरह की शारीरिक बीमारियां भी हो जाती हैं।

विद्यालय छोड़ देना : वर्ष 2011 की राष्ट्रीय शैक्षिक रिपोर्ट के अनुसार बालिकाओं का विद्यालय छोड़ने का एक मुख्य कारण शौचालय न होना भी है। विद्यालय छोड़ने वाली 24 प्रतिशत बालिकाएं शौचालय न होने के कारण विद्यालय छोड़ देती हैं। बालिकाओं की शिक्षा में यह एक बड़ी चुनौती है।

30 करोड़ महिलाएं और किशोरियां प्रभावित : विश्व स्वास्थ्य संगठन की वर्ष 2011 की रिपोर्ट के अनुसार 30 करोड़ महिलाओं को खुले में शौच करने के कारण शर्म और उत्पीड़न सहना पड़ता है। इनमें से 30 प्रतिशत महिलाएं खुले में शौच के कारण मानसिक और शारीरिक रूप से हिंसा का शिकार हुई हैं। शहरों की झुग्गी बस्तीयों में रहने वाली 70 फीसदी बालिकाओं से शौच पर जाते समय छेड़छाड़ होती है। गांव से दूर खुले में शौच जाने से उनका समय भी व्यर्थ जाता है। अगर घर में शौचालय हो तो महिलाओं और किशोरियों को इन सभी समस्याओं से न जूझना पड़े।

खुले में शौच से बीमारी का फैलना

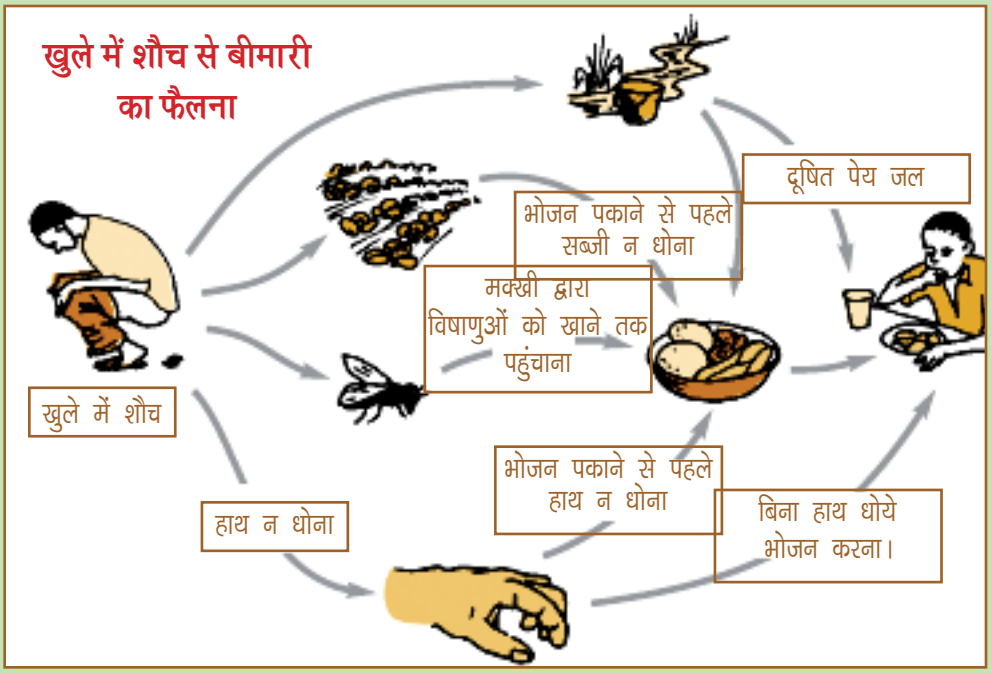

शिशु मृत्युदर का कारण भी खुले में शौच

यूनिसेफ द्वारा वर्ष 2013 में स्वच्छता पर जारी की गई एक रिपोर्ट में बताया गया है कि शिशु मृत्युदर में (0–5 वर्ष) 88 प्रतिशत मृत्यु हैजा, दूषित जल, दूषित भोजन से होती है। भारत में प्रतिवर्ष 6 लाख बच्चों की मौत हैजा के कारण होती है। इसका सबसे बड़ा कारण खुले में शौच करना है।

शिक्षा, सूचना और मनोरंजन : दूरदर्शन

टेलीविजन आज हमारे मनोरंजन का सबसे चहेता साधन है। यह अब घर-घर में देखा जा सकता है। इसके साथ ही सेट टॉप बॉक्स तेजी से बढ़ रहे हैं। डीटीएच अर्थात डायरेक्ट टू होम अर्थात 'सीधे घर में सेवा' ने अब पूरी दुनिया में घट रही घटनाओं और मनोरंजन को हमारे सामने रख दिया है। अब हमारे सामने टेलीविजन के मनोरंजन वाले बहुत से चैनल हैं, लेकिन सर्वप्रथम मनोरंजन का साधन दूरदर्शन ही रहा।
आईये पढ़ते है दूरदर्शन के बारे में।

भारत में सरकारी प्रसारक दूरदर्शन ने 55 साल पूरे कर लिये हैं। 15 सितंबर 1959 को दूरदर्शन की शुरुआत हुई थी। शुरू में कई वर्षों तक दूरदर्शन भारत में शिक्षा, सूचना और मनोरंजन का प्रमुख स्रोत रहा।

दूरदर्शन का पहला प्रसारण 15 सितंबर, 1959 को प्रयोगात्मक आधार पर आधे घंटे के लिए शैक्षिक और विकास कार्यक्रमों के रूप में शुरू किया गया। उस समय दूरदर्शन का प्रसारण सप्ताह में सिर्फ तीन दिन आधा-आधा घंटे होता था, तब इसको 'टेलिविजन इंडिया' नाम दिया गया था। बाद में 1975 में इसका हिंदी नामकरण 'दूरदर्शन' नाम से किया गया। यह दूरदर्शन नाम इतना लोकप्रिय हुआ कि टीवी का हिंदी पर्याय बन गया।

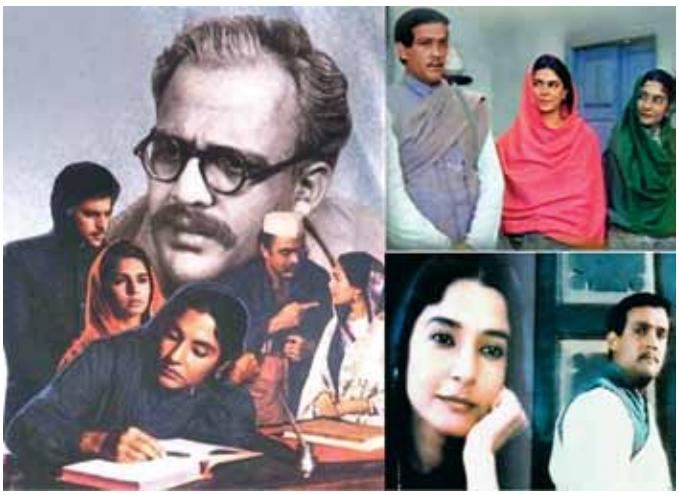

शुरुआती दिनों में दिल्ली भर में 18 टेलीविजन सेट लगे थे और एक बड़ा ट्रांसमीटर लगा था, तब दिल्ली में लोग इसको आश्चर्य के साथ देखते थे। इसके बाद दूरदर्शन ने धीरे-धीरे अपने पैर पसारे और दिल्ली (1965), मुंबई (1972), कोलकाता (1975), चेन्नई (1975) में इसके प्रसारण की शुरुआत हुई।

शुरुआत में तो दूरदर्शन दिल्ली और आस-पास के कुछ क्षेत्रों में ही देखा जाता था। दूरदर्शन को देश भर के शहरों में पहुंचाने की शुरुआत 80 के दशक में हुई। दरअसल इसकी वजह 1982 में दिल्ली में आयोजित होने वाले एशियाई खेल थे। एशियाई खेलों के दिल्ली में होने का एक लाभ यह भी मिला कि दूरदर्शन रंगीन हो गया था, फिर दूरदर्शन पर शुरू हुआ पारिवारिक कार्यक्रम 'हम लोग' जिसने लोकप्रियता के तमाम रिकॉर्ड तोड़ दिए।

1984 में देश के गांव-गांव में दूरदर्शन पहुंचाने के लिए देश में लगभग हर दिन एक ट्रांसमीटर लगाया गया। इसके बाद आया भारत और पाकिस्तान के विभाजन की कहानी पर बना 'बुनियाद' कार्यक्रम, जिसने विभाजन की त्रासदी को उस दौर की पीढ़ी से परिचित कराया। इस धारावाहिक के सभी किरदार आलोक नाथ (मास्टर जी), अनीता कंवर (लाजो जी), विनोद नागपाल, दिव्या सेठ घर-घर में लोकप्रिय हो चुके थे। फिर तो एक के बाद एक बेहतरीन और शानदार धारवाहिक ने दूरदर्शन को घर-घर में पहचान दे दी।

दूरदर्शन पर 1980 के दशक में प्रसारित होने वाले मालगुडी डेज, ये जो है जिंदगी, रजनी, ही मैन, वाहः जनाब, तमस, बुधवार और शुक्रवार को 8 बजे दिखाया जाने वाला फिल्मी गानों पर आधारित चित्रहार, भारत एक खोज, व्योमकेश बक्शी, विक्रम बेताल, टर्निंग प्वाइंट, अलिफ लैला, फौजी, रामायण, महाभारत, देख भाई देख ने देश भर में अपना एक खास दर्शक वर्ग ही नहीं तैयार कर लिया था बल्कि हिंदी न बोलने वाले राज्यों में भी इन धारवाहिकों को जबरदस्त लोकप्रियता मिली।

रामायण और महाभारत जैसे धार्मिक धारावाहिकों ने तो सफलता के तमाम कीर्तिमान ध्वस्त कर दिए थे। 1986 में शुरू हुए रामायण और इसके बाद शुरू हुए महाभारत के प्रसारण के दौरान रविवार को सुबह देश भर की सड़कों पर जैसे सन्नाटा पसर जाता था और लोग अपने महत्वपूर्ण कार्यक्रमों से लेकर अपनी यात्रा तक इस समय पर नहीं करते थे।

दूरदर्शन के चैनल : आधे घंटे के प्रसारण से शुरू हुए दूरदर्शन के आज 21 चैनल हैं। भारत के सभी 29 राज्य और 7 केन्द्र शासित प्रदेशों में दूरदर्शन राष्ट्रीय (डीडी नेशनल) और दूरदर्शन समाचार (डीडी न्यूज) का प्रसारण किया जाता है। इसके अलावा 11 क्षेत्रीय भाषाओं, 4 राज्य भाषाओं में भी दूरदर्शन प्रसारण करता है। खेलों के प्रसारण के लिए दूरदर्शन का चैनल डीडी स्पोर्टस है। राज्यसभा और लोकसभा के सत्र का प्रसारण करने वाले एकमात्र चैनल दूरदर्शन के राज्यसभा चैनल और लोकसभा चैनल से प्रसारण किया जाता है। विदेश में प्रसारण के लिए दूरदर्शन भारत नाम से दूरदर्शन की अंतरराष्ट्रीय सेवा है। इसके अलावा मनोरंजन के लिए दूरदर्शन डीडी मेट्रो चैनल से प्रसारण किया जाता है।

किसानों को समर्पित आ रहा है नया चैनल

सरकार ने पूरी तरह से खेतीबाड़ी, पशुपालन और किसानों पर आधारित एक नए राष्ट्रीय टीवी चैनल स्थापित करने का निर्णय लिया है। प्रस्तावित "डीडी किसान चैनल" के नाम और संवर्धन के लिए लोगों से सुझाव तथा विचार मांगे गए हैं। जल्द ही यह चैनल प्रसारित किया जाएगा।

क्यों है महत्वपूर्ण दूरदर्शन : आज हमारे सामने मनोरंजन और सूचना व समाचार प्राप्त करने की दृष्टि से कई चैनल हैं परन्तु दूरदर्शन की एक अलग पहचान है। दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल डीडी नेशनल पर ऐसे राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना तथा मन में एकता एवं भाई-चारे की भावना बढ़ाना है।

सभी महत्वपूर्ण राष्ट्रीय आयोजनों जैसे गणतंत्र दिवस परेड, स्वतंत्रता दिवस समारोह, राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह, राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के राष्ट्र के नाम संबोधनों, संसद के संयुक्त सत्र में राष्ट्रपति के अभिभाषण, संसद में होने वाली महत्वपूर्ण बहसों, रेलवे और आम बजट प्रस्तुत करने, लोकसभा और राज्यसभा के प्रश्न काल, चुनाव परिणाम और उनका विश्लेषण, शपथ ग्रहण समारोहों, राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री की विदेश यात्राओं और विदेश से भारत आने वाले विशिष्ट व्यक्तियों की यात्राओं का डीडी-नेशनल पर सीधा प्रसारण किया जाता है। महत्वपूर्ण खेल-कूद आयोजनों जैसे ओलंपिक, एशियाई खेल, क्रिकेट टेस्ट मैचों और अन्तर्राष्ट्रीय एक दिवसीय मैचों, जिनमें भारत एवं अन्य महत्वपूर्ण खेल प्रतिद्वंदी भाग ले रहे हों, का भी सीधा प्रसारण किया जाता है।

शिक्षा संबंधी कार्यक्रम इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू), विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी), केंद्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी) और राज्य शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (एसआईईटी) जैसे विभिन्न स्रोतों से प्राप्त किए जाते हैं। इसके अलावा, टर्निंग प्वाइंट, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम, टेरा क्विज और भूमि (पर्यावरण से संबंधित कार्यक्रम) जैसे प्रायोजित कार्यक्रम, महिलाओं, जनजातीय मामलों से जुड़े विषयों पर कार्यक्रम और लोक सेवा संबंधी अन्य कार्यक्रम भी नियमित आधार पर केवल दूरदर्शन पर ही प्रसारित किए जाते हैं ।

पंचायत के साथ बाल अधिकारों की बात

बच्चों के अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए पंचायतों की तरफ से पहल होनी शुरू हो गई है। कोलायत के गांवों में अब ग्राम पंचायतें बालिकाओं के जन्म पर खुशियां मनाने लगी हैं। इस पहल में महिलाएं ही नहीं पुरुष भी हिस्सा ले रहे हैं। पिछले दो महीनों में कोलायत, कोटड़ी, चानी, माणकासर, बीकमपुर, चारणवाला, बज्जू, अक्कासर और 860 आरडी में जन्मी 679 बालिकाओं का जन्मोत्सव पंचायत ने धूमधाम से मनाया। कोटड़ी सरपंच मांगीदास साध, बज्जू सरपंच गुमानाराम, बांगडसर सरपंच सफी खां ने बालिका जन्मोत्सव में थालियां बजाईं। आशा सहयोगिनी, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और ए.एन.एम. ने भी इन समारोह में भाग लिया। पंचायतों ने बालिका जन्मोत्सव पर परिवारों को कन्या जन्म बधाई पत्र और स्मृति चिन्ह भेंट किए।

जन्म पंजीकरण पर हुई बात

इन कार्यक्रमों में सरपंचों ने सभी परिवारों को नवजात का जन्म पंजीकरण करवाने की बात पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि बच्चों का जन्म पंजीकरण करवाना बहुत ही जरूरी है इससे हम लिंगानुपात के अंतर का पता लगाकर लिंगानुपात को समान कर सकते हैं।

बालिकाओं की गरिमा सभी करें सुनिश्चित

बांगडसर पंचायत में आयोजित कार्यक्रम में सरपंच सफी खां ने लोगों के समक्ष अपनी बात रखते हुए कहा कि वर्तमान में बालिकाओं की सुरक्षा और विकास सुनिश्चित करना हम सभी की जिम्मेदारी है। हमें बालिकाओं को ऐसा माहौल देना चाहिए जिसमें वह खेलकूद, पढ़ने और अपने जीवन को विकसित करने के हर एक कार्य बिना किसी रोक-टोक के कर सकें।

बाल विवाह समाप्त करने की ओर अग्रसर

कोटड़ी सरपंच मांगीदास साध ने कहा कि बाल विवाह को समाप्त करना हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है। हमें अपनी बालिकाओं को पढ़ने के मौके देने चाहिए जिससे वह अपने आप को स्थापित कर सकें और अपने अधिकारों को समझ सकें।

सभी परिवार भेजें बालिकाओं को विद्यालय

चारणवाला पंचायत में आयोजित कन्या जन्मोत्सव में सरपंच चावली देवी ने समारोह में आए लोगों को बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि हम सबकी यह जिम्मेदारी है कि बालिकाएं नियमित रूप से विद्यालय जाएं और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करें। बालिकाएं पढ़ेंगी तो अपने पैरों पर खड़ी होंगी।

अपना पोषाहार खुद उगाते मेडक जिला के विद्यालय

हाल ही में भारत के 29वां राज्य बने तेलंगाना के मेडक जिले के 150 स्कूल अपने पोषाहार के लिए सब्जियां खुद की उगाते हैं। 15000 से ज्यादा बच्चों को यह ताजी हरी सब्जियों वाला पोष्टिक आहार प्रतिदिन खाने को मिलता है। यह सब्जियां जैविक खेती के माध्यम से बच्चों द्वारा ही विद्यालय के प्रांगण में उगाई जाती हैं। इससे विद्यालय में हरियाली तो होती है और बच्चे सब्जियां किस प्रकार उगाई जाएं इसके बारे में भी सीखते हैं।

सेंटर फॉर इन्वायरमेंट एजुकेशन, आंध्र प्रदेश ने इस पहल की शुरुआत 2007 में की। इस पहल का मुख्य उद्देश्य बच्चों को पर्यावरण की शिक्षा देने के साथ-साथ उनके पोषण स्तर में सुधार लाना है। शिक्षा विभाग और गांव की किसान समितियों ने मिलकर इस कार्य को करने की योजना बनाई। प्रत्येक विद्यालय में एक शिक्षक को इस विषय का अध्यापक नियुक्त किया गया। जिन गांवों में यह विद्यालय थे, उन गांवों के किसानों ने विद्यालय में आकर बच्चों को सब्जियों की क्यारियां, बिजाई, जुताई, भूमि को उपजाऊ बनाना और कृषि औजारों को चलाने का प्रशिक्षण दिया। विद्यालय में व्यर्थ जाने वाले पानी से ही इन क्यारियों की सिंचाई की गई। इसके साथ ही बच्चों को जैविक खाद बनाने का प्रशिक्षण भी दिया गया। बिजाई से लेकर कटाई तक जिम्मेदारी बच्चों के अलग-अलग समूहों को दी गई। अवकाश के दिनों में विद्यालय के निकट रहने वाले बच्चे इन बगीचों की देख-रेख करते हैं।

पर्यावरण के इस प्रयोग वाले विषय का मूल्यांकन विद्यालय के अध्यापक द्वारा निरंतर किया जाता है। मूल्यांकन के आधार पर बच्चों को अंक भी दिए जाते हैं। इन विद्यालयों से प्रेरणा लेकर मेडक जिले के और 100 विद्यालयों ने अपने प्रांगण में सब्जियां उगाना शुरू कर दिया है।

दीवारों पर बालिका गरिमा का संदेश देते चित्र

लिंग जांच और कन्या भ्रूण हत्या को समाप्त करने के लिए कोलायत के गांव अब एकजुट हो गए हैं। पंचायत भवन में बालिका गरिमा को स्थापित करते चित्रों के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि बालिकाओं को समान अधिकार देना हमारी जिम्मेदारी है। कोटड़ी, बांगड़सर, बज्जू, अक्कासर, कोलायत, मण्डाल चारणान में ग्राम पंचायत की दीवारें अब 'लिंग जांच एक अपराध है' संदेश देती देखी जा सकती हैं। इन पंचायतों ने अपने लैटर हेड पर बालिका सशक्तिकरण के लिए नारे भी प्रकाशित किए हैं।

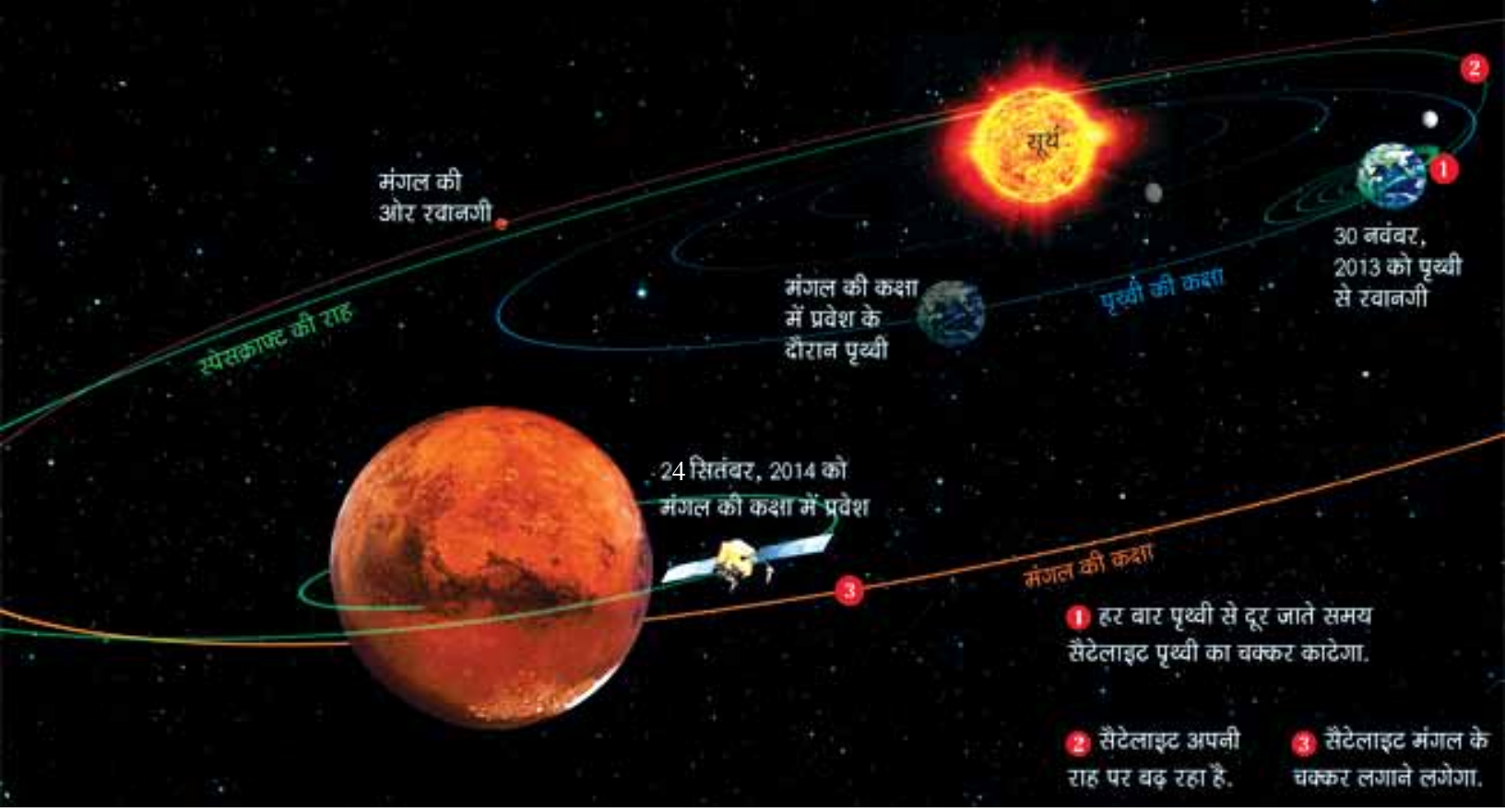

पहली बार में ही मंगल ग्रह पहुँचा मंगलयान : भारत ने रचा इतिहास

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के उपग्रह मंगलयान ने मंगल ग्रह की परिभ्रमण कक्षा में सफलतापूर्वक प्रवेश कर लिया है। इस तरह से मार्स ऑर्बिटर मिशन (मॉम) की कामयाबी से भारत ऐसा देश बन गया है जिसने एक ही प्रयास में अपना मंगल अभियान पूरा कर लिया। भारत से पहले 5 देशों ने अपना उपग्रह मंगल ग्रह के परिभ्रमण कक्ष में स्थापित करने का प्रयास किया। अमेरिका, रूस और यूरोपीय संघ को असफलताओं के बाद सफलता मिली जबकि जापान और चीन अभी भी इसके प्रयास में है। भारत ने पहली बार अपना उपग्रह मंगल ग्रह के परिभ्रमण कक्ष पर भेजा और उसे पहली बार में ही सफलता मिल गई। भारत ने इस मिशन पर करीब 450 करोड़ रुपए खर्च किए है, जो बाकी देशों के अभियानों की तुलना में सबसे कम है।

भारत के मंगल अभियान का निर्णायक चरण 24 सितंबर को सुबह यान को धीमा करने के साथ ही शुरू हो गया था। इस मिशन की सफलता उन 24 मिनटों पर निर्भर थी, जिस दौरान यान में मौजूद इंजन को चालू किया गया। मंगलयान की गति धीमी करनी थी ताकि ये मंगल की परिभ्रमण कक्षा में गुरूत्वाकर्षण से खुद-ब-खुद खिंचा चला जाए और वहां स्थापित हो जाए, और जब मंगलयान की गति धीमी की गई तो यह मंगल ग्रह की कक्षा में स्थापित हो गया।

क्या मिलेगा मंगलयान से? - मंगलयान से धरती तक जानकारी पहुंचने में करीब साढ़े बारह मिनट का समय लग रहा है। अगर सब ठीक रहा तो मंगलयान छह महीनों तक मंगल ग्रह के वातावरण का अध्ययन करेगा। ये मीथेन गैस का पता लगाएगा, साथ ही रहस्य बने हुए ब्रह्मांड के उस सवाल का भी पता लगाएगा कि क्या हम इस ब्रह्मांड में अकेले हैं? ये भी अनुमान है कि कक्षा में स्थापित होने के कुछ ही घंटों में यान एक भारतीय आँख जो कि एक तरह का बड़ा कैमरा है, के द्वारा मंगल ग्रह की ली गई तस्वीरें भेजना शुरू कर देगा।

URMUL SEEMANT

संपादन:- विपिन उपाध्याय, रवि मिश्रा, संपादन सहयोग- डॉ. हरिशंकर भोजक
प्लान इंडिया के सहयोग से उरमूल सीमांत समिति द्वारा प्रकाशित।
उरमूल सीमांत समिति-बज्जू, तहसील कोलायत, जिला-बीकानेर, राजस्थान-334305
फोन:- 01535-232034, ई-मेल:- mail@urmul.org, वेबसाइट:- www.urmul.org

Plan
There's a plan for every child.